YOGI CHIKITSA PATH
PARDARSHIKA G.K.V.

YOGI CHIKITSA
PATH ~~PRDASHIKA~~
PARDARSHIKA

केवल चिकित्सको
के उपयोग
के लिए

योगी

चिकित्सा पथ प्रदर्शिका

©
©
©

सेवन

क

य :-

योगी

योगी फार्मेसी

औषधि उत्पादन एवं अनुसंधान में अग्रणी
पोस्ट:- गुरुकुल कांगड़ी
हरिद्वार (भारत)

प्रस्तावना

मानव की उत्पत्ति के साथ ही रोग और रोग के साथ चिकित्सा शास्त्र की उत्पत्ति हुई है। भारत वर्ष में चिकित्सा शास्त्र का इतिहास अतीत के धूमिल और विस्तृत क्षितिज तक पहुंचा हुआ है, ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में अनेक रोगों के लिए अनेक प्रकार की वनस्पतियों का पूर्ण विवरण विद्यमान हैं; हजरत ईसा से १००० वर्ष पूर्व रचित "चरक संहिता" में आयुर्वेद की चहुंमुखी चिकित्सा का बहुत ही वास्तविक और विशुद्ध वर्णन है, जो उस समय तक के भारतीयों की खोज रही है। इस वैज्ञानिक आयुर्वेद चिकित्सा ग्रंथ में वर्णित अनेक औषधियों को आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में भी स्थान प्राप्त है।

"पूर्ण वैज्ञानिक आयुर्वेद की वनस्पति चिकित्सा मानव जाति का बहुत बड़ा ... कर सकती है।" इस विश्वास के साथ ही १९६० से 'योगी फार्मेसी' ने इस ... आगे बढ़कर अनुसंधान, संशोधन तथा प्रमाणीकरण का कार्य अनेक वनस्पति- ... किया और परिणाम स्वरुप अनेक प्रभावशाली एवं उत्तम वनस्पतियों से आधु- ... ज्ञानिक औषध निर्माण प्रणाली के अनुसार प्रभावी योगों का निर्माण किया; ... रचना में आधुनिक तकनीकी विज्ञान तथा प्राचीनतम आयुर्वेद चिकित्सा का ... समावेश किया गया है।

...तक चिकित्सा के चार निम्न विशेष गुण हैं —

सेवन ... ये प्रकृति की स्वास्थ्य प्रद शक्ति का मूर्तिमान स्वरुप है, जिन का प्रयोग ... चिकित्सा में किया जाता है।

कु... रोगों को जड़ सहित नाश करने की पूर्ण क्षमता रखती हैं।

...य :— इनमें, कृत्रिम रुप से बनाई गयी रसायनिक औषधियों के समान कोई दुष्प्रभाव नहीं होते।

...— इनका प्रभाव यद्यपि धीरे-धीरे होता है परन्तु वह एक समान एवं जीवन प्रर्यन्त रहता है। जिससे मानव में रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है।

'योगी फार्मेसी' के योग उन विशिष्ट वनस्पतियों से तैयार किये जाते हैं जो हमारे पूर्वजों से हमें सांस्कृतिक और पूर्ण वैज्ञानिक उत्तराधिकार में मिली है। उत्तम विशुद्ध वनस्पतियों को प्राप्त करने के लिए तथा उसके निरीक्षण की दृष्टि से हिमालय के क्षेत्र में योगी वैज्ञानिक (विशेषज्ञ) समय-समय पर पहुंचते हैं और उनका सीधा बड़ी मात्रा में आदर्श संग्रह कराते हैं। इस प्रकार संग्रह की गई वनस्पतियों का आधुनिक औषधि निर्माण की अत्यन्त सावधानी युक्त, वैज्ञानिक प्रणालियों द्वारा

परीक्षण एवं निरीक्षण करके 'योगी फार्मेसी' ने अपने विशिष्ठ योग बनाये हैं। व संग्रहीत वनस्पतियों को अन्य औषधि निर्माताओं की सेवा में देश विदेश में प्रस्तुत करती हैं।

हमारा सदा ही यह प्रयत्न रहता है कि इन प्रभावी औषधियों को प्राणी मात्र के कल्याण के लिए प्रस्तुत करते रहें। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन वनस्पतियों द्वारा औषधि निर्माण में हम आधुनिक विज्ञान के कड़े नियन्त्रण में विशुद्ध नवीनतम वैज्ञानिक प्रणाली का आश्रय लेते हैं। इस प्रकार के सतत चलने वाले अनुसंधान के साथ फार्मेसी के निर्माताओं को पिछली एक शताब्दी से अधिक का पैत्रिक निर्माण एवं चिकित्सा के अनुभव के फलस्वरुप—**अर्शोना, गैसांतक, लिकोप्लैक्स, रिनौन, सैक्सोटैक्स, योगी रसायन** आदि आदि के निर्माण तथा गुणों की विशेष प्रभावशालीनता व उपयोग में पर्याप्त सुधार हो गया है।

विगत वर्षों में जो ख्याति विश्वास और आत्मीयता हमें भारत भर के चिकित्सकों, संत एवं महात्माओं और विशिष्ट व्यक्तियों से मार्ग दर्शन के रुप में मि[illegible] हैं वह इस आर्थिक होड़ के युग में भी निरन्तर प्रगति पथ पर चलने के लिए वि[illegible] रुप से सहायक हुई तथा हमें उत्तमोत्तम औषधि निर्माण के लिए प्रोत्साहन मिल[illegible]

'प्रभु' से हमारी हार्दिक प्रार्थना है कि हमें इस पुनीत सेवा [illegible] सामर्थ्य प्रदान करें ताकि मानव जाति के अधिक से अधिक क[illegible] हो सकें।

व्यवस्थापक

योगी फार्मेसी

अकरकरादि चूर्ण

परमसार चूर्ण

योगी

मसूड़ों व दांतों को निरोग बनाने वाला सर्व श्रेष्ठ दंत मंजन।

योग :—

रूमी मस्तगी	२.५० %	अकरकरा	४१.०० %
यवानी सत्व	२.५० ,,	सैन्धव	२०.०० ,,
स्फटिक पुष्प	५.५० ,,	कपूर	२.५० ,,
माजूफल	५.५० ,,	हरिद्रा	२.०० ,,
लवंग	५.५० ,,	त्रिकटु	७.५० ,,
शीतल चीनी	५.५० ,,		

[illegible]ण धर्म एवं व्याधि निर्देशः—

© पायरिया-दांतों व मसूड़ों से खून पस व रक्त को रोकने की पूरी चिकित्सा है।

© यह दंतशूल को बन्द कर दंत कृमियों को नष्ट करता है।

© दांतों में पानी लगना, दांतों के हिलने आदि में निश्चित उपयोगी।

© मुख की दुर्गन्ध व दांतों की सफाई के लिए सर्वश्रेष्ठ।

सेवन विधि :—

प्रातः सायं थोड़ा-२ चूर्ण (मंजन) ब्रश अथवा अंगुली से दांतों पर मले व कुल्ला करें।

[illegible]य :—

दोनों समय भोजनोपरान्त कुल्ला करें।

उपलब्धि :—

५० ग्राम व १०० ग्राम की मुहरबन्द डिब्बियों में।

अर्शीना

योगी

टिकिया और प्रलेप (मलहम)

अर्श व भगन्दर की वेदना रक्त स्राव और शोथ को शांत कर शल्य कर्म से बचाता है।

योग :—

अर्शीना की प्रत्येक टिकिया में औषधियों का अनुपात :—

दारु-हरिद्रा-धन सत्व	३२.०५ %	स्वर्ण माक्षिक भस्म	५.०० %
निम्ब फल मज्जा	१६.०५ ,,	दरयाई नारियल	१.२५ ,,
महा निम्ब फल मज्जा	१६.५० ,,	अरिष्टक त्वक	२.५० ,,
नाग केशर	५.०० ,,	शुद्ध गुग्गुल	१५.५० ,,
कहरवा	६.१५ ,,		

भावना :—

करंज, त्रिफला, मूलक, सूरणकंद, काक जंघा के रसों और काढ़ों से भावित तैयार की जाती है।

अर्शीना प्रलेप में औषधियों का अनुपात :—

निर्गुंडी स्वरस	३.५० %	कासीसादि तैल	२५. ० %
निम्बवसा	२५.०० ,,	माक्षिका स्कीथ	,,
महा मरिच्यादि तैल	१०.०० ,,	महीषी मूत्र	२.५ ,,
कम्पिल	२.०० ,,	कज्जली	२.०० ,,
तिलसार	१०.०० ,,	शुद्ध मनःशिला	२..
कपूर	६.०० ,,	हरित विजया स्वरस	५.

अर्शीना टिकिया :—

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देशः—

बवासीर व भगन्दर के मूल कारण।

- © यकृत में मल संचय को दूर करती है।
- © शिराओं में अस्वाभाविक रक्त संचय को रोक कर उनकी भित्तियों को शक्तिशाली बनाती है। और उनके शोथ, दर्द, जलन, रक्त स्राव और फूलने को कम करती है।
- © यकृतीय शिरा में दबाव को स्वभाविक कम करती है।

योगी

अर्शीना प्रलेप :—

© बवासीर चाहे खूनी हो या बादी दोनों में कण्डू (खाज), वेदना, और रक्त स्राव व शोथ को दूर करने व मस्सों को बिना कष्ट नष्ट करने में सहायक है।

© यह गुदा एवं गुदा वल्लियों को चिकना एवं नरम बनाता है जिससे कि शौच (मल) को बाहर आतेसमय कष्ट नहीं होता।

© संक्रमण रोधक (ऐन्टिसेप्टिक) है।

© काँच अर्थात् शौच जाते समय गुदा यदि बाहर आती हो तो भी लाभ प्रद है।

ना टिकिया :—

विधि :—

१ से २ टिकिया दिन में ३ बार एक सप्ताह तक पुनः २ टिकिया २ बार दिन में, ४ से ६ सप्ताह तक।

लेप —

शौच ... ले एवं पश्चात् अंगुली से गुदा के अन्दर लगावें।

सूचना :—

अर्शीना प्रलेप व टिकिया सदा एक साथ सेवन करने से अधिक लाभ करती है। इसके साथ-२ तस्कीने लेप केउपयोग से खून का बहना जल्दी बन्द हो जाता है।

प्रलेप सभी प्रकार के शिरागत, रक्तसंचय और शिरा वृद्धि, अवरोध व विकृतियों (वेरीकोसवेन्स) थ्राम्बो फ़्लेबाईटिस आदि अर्श में गुदचीर और गुदा की शोथ में लाभप्रद है।

पथ्य :—

भोजन में मिश्री व मक्खन, तक्र (मट्ठा) मूली, पालक, जिमीकन्द, अनानास व नींबू, इसबगोल भूसी का प्रयोग करें तथा मिर्च, तैल, अचार, खटाई व गरिष्ठ भोजन न करें।

अर्शोना

टिकिया और प्रलेप (मलहम)

योगी

उपलब्धि :—

टिकिया :—१० टिकियों के स्पत्र व १० सपत्रक एक पैकिट में।
३०, १०० व ५०० टिकियाँ मोहर बन्द डिब्बों में।

प्रलेप:—२५ ग्राम व १०० ग्राम ट्यूब में।

अर्शीना का प्रयोग १२ रोगियों पर किया गया, इससे पहली व दूसरी अवस्था के ८ रोगी तो बिलकुल ठीक हुए, परन्तु तीसरी अवस्था के २ रोगियों को आंशिक लाभ पहुंचा, एक रोगी का रक्त लगभग एक सप्त ह तक भी नहीं रुक सका। मेरे विचार में अर्श की शास्त्रीय चिकित्सा में इसे अवश्य ही उचित स्थान मिलना चाहिए।

डा० आर० पी० डौडियाल
बी० आई० एम० एस०;
एच० पी० ए०
अध्यक्ष—**राजकीय चिकित्सालय**
जौगिन्दर नगर (हिमाचल)

आमलकी रसायन

परमसत्व चूर्ण

आयुर्वेद की सर्वोत्कृष्ट आयु, बल एवं वीर्य वर्धक रसायन है।

योग :—

आमलकी चूर्ण १०० %

भावना :—

आमलकी स्वरस की १०१ भावना से तैयार किया जाता है।

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

- पेट के समस्त विकारों के लिए अद्वितीय है।
- यह दाह प्रशामक (ऐसिडिटी हर) तथा रुचिवर्धक अग्नि- दीपक है।
- शरीरस्थ कैल्शियम, लौह धातु एवं विटामिन 'सी' का पूरक है।
- नेत्र ज्योति और केशरोग नाशक, गर्भरोधक तथा प्रमेहघ्न है।
- हृदय व मस्तिष्क को विशेष बल देता है।
- जिन स्त्रियों के गर्भ गिर जाते हैं, यदि वह गर्भावस्था में नियमित इसका सेवन करती रहें तो गर्भ व गर्भिणी स्वस्थ व नीरोग रहती हैं।
- इसका आबालवृद्ध सभी, सब प्रकार की ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

सेवन विधि :—

१ से ३ ग्राम तक दिन में दो बार दूध से लें। पेट के रोगों में भोजनोपरान्त मठ्ठे अथवा साधारण जल से सेवन करें।

पथ्य :—

रसायन प्रयोग के दिनों में मिर्च, तैल, खटाई आदि का सेवन न करें। पेट के रोगों में साथ ही योगी गैसान्तक का भी उपयोग करें तो बहुत उत्तम होगा।

उपलब्धि :—

५० ग्राम व १०० ग्राम की मुहरबन्द डिब्बियों में।

कफसीन

टिकिया एवं पानक

योगी

सभी प्रकार की खांसी की निरापद औषध

कफसीन की प्रत्येक टिकिया में औषधियों का अनुपात:—

योग :—

मुलहठी सत्व	०.५० %	बादियान खताई	१०.०० %
हब्बालास	०.५० ,,	वासा	०.५० ,,
लवंग	१०.०० ,,	दाल चीनी	१०.०० ,,
पीपल	१०.०० ,,	टंकण	५.०० ,,
काकड़ा सींगी	५.०० ,,	कपूर	३.०० ,,
सत्व पौदीना	३.०० ,,	सितोपलादि चूर्ण	२६.०० ,,

कफसीन पानक १०० मि० लि० का अनुपात :--

वासा	१०.०० %	पोस्त	६.०० %
कंटकारी	३.०० ,,	बहेड़ा	३.०० ,,
उन्नाव	३.०० ,,	पुष्कर मूल	३.००
शुद्ध शर्करा	४०.०० ,,	काकड़ा सींगी	३.०
सोमकल्प	८.०० ,,	मुलहटी	६.०० ,,
भारगीं	३.०० ,,	गुलबनसा	६.० ,,
यवक्षार	१.०० ,,	पौदिन सत्व	२.०० ,,
टंकण पुष्प	२.०० ,,	कपूर	१.००

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

कफसीन टिकिया :—

- © गले की खराश, जलन, लाली से शीघ्र छुटकारा दिलवाने में सहायक है ।
- © सभी प्रकार की खांसी, विशेष कर सूखी खांसी में परम उपयोगी है ।
- © गले व श्वास नली का संक्रमण रोधक है जिससे स्वरभंग को दूर करती है ।

© श्वासावरोध व गले बढ़ने (टान्सिलस) की वेदना व तनाव को कम करती है।

कफसीन पानक :—

© श्वास संस्थान को सबल बनाकर आने वाले रोगों से पूरी तरह रक्षा करता है।

© सभी प्रकार की खांसी और विशेषकर बच्चों की काली खांसी में विशेष उपयोगी है।

© गले की खराश, श्वास नली की सूजन, निमोनिया, ज्वर, अस्थमा, क्षय की सभी अवस्थाओं में परम उपयोगी है।

© नजला, जुकाम, इन्फलुएेंजा के दर्द, ज्वर आदि शामक है।

सेवन विधि :—

कफसीन टिकिया :—

प्रत्येक २-३ घण्टे के बाद मुख में रखकर एक-एक गोली चूसें।

कफसीन पानक :—

एक से दो चम्मच (छोटे) दिन में दो तीन बार सेवन करें।

पथ्य :—

इसके सेवन काल में खटाई, तैल, डालड़ा, चावल, व बर्फ का ठण्डा पानी न लें। कफसीन के साथ योगी च्यवनप्राश व योगी चाय विशेष हितकर है।

उपलब्धि :—

टिकिया :—१० टिकियों के स्पत्र व ऐसे १० सपत्रक १ पैकिट में।
३०, १००, ५००, टिकियां मोहर बन्द डिब्बियों में।

पानक—११०मि०ली०, ५००मि०ली० व ५ लीटर की मोहर बन्द बोतलों में।

कैशला पाऊडर

चूर्ण

योगी

वालों को काला लम्बा, घना तथा घुंघराला बना कर झड़ने व सफेद होने से रोकता है।

योग :—

त्रिफला	१५.०० %	शिकाकाई फल मज्जा	१०.०० %
भृंगराज	५.०० ,,	चन्दन श्वेत	७.०० ,,
अरिष्टक त्वक	५.०० ,,	श्वेत गुंजा	१०-०० ,,
विडंग	५.०० ,,	दाडिम त्वक	५-०० ,,
बादाम गिरी त्वक	६.०० ,,	वेसन	१०-०० ,,
जाती पत्री	७.०० ,,	सारिवा	१०-०० ,,
कपूर (भीमसेनी)	५.०० ,,		

भावना :—

भांगरा, आमला, मीठा नीम, सारिवा क्वाथ की भावना से तैयार किया जाता है।

© आज भारत भर में बालों का गिरना तथा अल्प समय में ही सफेद हो... आदि रोगों के रोगी प्रायः प्रत्येक परिवार में मिलते हैं। इस पर स्वयं के अनुसन्धान के बाद यह अपूर्व औषध खोज निकाली है।

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© यह बालों को झड़ने से रोकता है और उन्हें स्थायी रूप से काला करता है।

© बालों को रेशम की भांति करके उनकी फियाज सीक्री आदि को समाप्त करता है और छोटी-२ फुन्सियों को नष्ट करता है तथा जीवाणु नाशक भी है।

सेवनविधि :—

१० से १५ ग्राम चूर्ण रात को मिट्टी या चीनी के पात्र में भिगोवें व प्रातः स्नान से पूर्व धीमे हाथ से सिर पर मलकर स्नान करें।

पथ्य :—

इसके सेवन के दिनों में आप साबुन का उपयोग न करें।

उपलब्धि :—

२०० ग्राम, ५०० ग्राम के मोहर बन्द पैंकिंग।

गैसांतक

टिकिया एवं चूर्ण

अम्लपित्त और आध्मान (गैस) में लाभप्रद

योग—

सर्जसत्व	६०.५० %	वराटिका भस्म	५.०० %
पोदीना सत्व	५.०० ,,	औरज चूर्ण	५.०० ,,
शंख भस्म	.०० ,,	आमलकी रसायन	.०० ,,
लौह भस्म	५.०० ,,	जातिफल क्षार	२.०० ,,
तैन्दुक क्षार	.०० ,,	चित्रक क्षार	२.०० ,,

भावना :—

दालचीनी, सुहाजना, आमलकी, शत पुष्पा की भावना से तैयार किया जाता है।

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :

© भारी एवं अनियमित भोजन के पश्चात् पाचन में सहायक।

© आध्मान (गैस) का बनना रोकता है।

© वमन, जी मचलना व अम्लपित्त का रोधक है।

© गैस व उससे उत्पन्न बैचेनी, भारीपन, अरूचि, अजीर्ण, अफारा, डकारों आदि का नाश करता है।

सेवनविधि :—

दीर्घ समय तक भी प्रयोग करने पर किसी भी प्रकार का दुष्प्रभाव नहीं होता इसे एक दिन के बालक से १०० वर्ष तक के वृद्ध सभी को सदा सेवन करा सकते है।

विशेष सूचना :—

चूर्ण— :—

१ से २ ग्राम दिन में दो या तीन बार ताजे जल या फल के रस से लें।

टिकिया—

१ से २ टिकिया दिन में तीन बार ताजे जल या फल के रस के साथ लें।

गैसांतक
परमसार चूर्ण

योगी

उपलब्धि :—

चूर्ण—

५० ग्राम, १०० ग्राम व १ किलो की मोहर बन्द डिब्बियों में।

टिकिया—

१० टिकियों के सपत्र ऐसे १० सपत्र एक बाक्स में एवं ३०, १००, ५००, की मोहर बन्द डिब्बियों में।

सभी रोगियों (८७) पर गैसांतक का प्रयोग किया और सभी पर इसका प्रयोग निश्चित लाभदायक सिद्ध हुआ।

डा० ए० पी० आनन्द
एम० बी० बी० एस०; पी० एम० एस०,
रीडर पैथोलौजी
गु० म० आ० का० ज्वालापुर

च्यवनप्राश (अष्टवर्ग युक्त)

अवलेह (जैमवत्)

योगी

सभी को सभी ऋतुओं में नवयौवन, स्वास्थ्य व दीर्घ जीवन प्रदान करने वाला विश्व का प्राचीनतम आयुर्वेदिक प्रयोग।

योग :—

धात्रीफल	३०.०० %	दालचीनी	०.१२ %
शुद्ध शर्करा	३०.०० ,,	सांठी	०.६० ,,
अष्टवर्ग	५.१६ ,,	मुस्तक	०.६० ,,
शुद्ध घृत	४.०० ,,	काकनासा	०.६० ,,
शुद्ध तिल तैल	४.०० ,,	दोनों पर्णी	१.२० ,,
मधु	३.७५ ,,	वराही कन्द	०.६० ,,
दशमूल	६.३० ,,	कमल	०.६० ,,
वंश लोचन	२.५० ,,	अगरु	०.६० ,,
पीपली	१.२० ,,	चन्दन	०.६० ,,
जीवन्ती वंगाल	०.६० ,,	अश्वगन्धा	०.६० ,,
नाग केशर	०.१२ ,,	तेजपात	०.१२ ,;
विदारी कन्द	०.६० ,,	वासा	०.६० ,,
छोटी इलायची	०.७० ,,	भूमि आमलकी	०.६० ,,
द्राक्षा	०.६० ,,	गुडूची	०.६० ,,
काकडासिंगी	०.६० ,,	हरितकी	०.६० ,,
पुष्कर मूल	०.६० ,,	बला	०.६० ,,

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© शारीरिक तन्तुओं की क्षीणता को रोक कर उन्हें सबल बनाता है जिससे नई जवानी, नया यौवन मिलता है और बुढ़ापा दूर होता है।

© श्वास प्रणाली के सभी रोग, जीर्ण कास, श्वास, क्षय, स्वर भंग आदि पर कुछ महीने लगातार योगी च्यवनप्राश के सेवन से निश्चित लाभ होता है।

© प्राकृतिक विटामिनों, खनिज लवणों एवं प्रोटीन से भरपूर होने के साथ ही शारीरिक विकास के लिये आवश्यक रसायनिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है।

© यह शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है जिससे आने वाले रोगों से रक्षा होती है और बुढ़ापे में भी शक्ति क्षीण नहीं होती।

च्यवनप्राश (अष्टवर्ग युक्त)

अवलेह (जैमवत्)

योगी

सेवनविधि :—

एक छोटा चम्मच (लगभग १० ग्राम) च्यवनप्राश दूध अथवा योगी चाय से प्रातः सायं छः मास तक सेवन करें।

पथ्य :—

च्यवनप्राश सेवन के दिनों में खटाई, मिर्च आदि तीक्ष्ण मसाले अचार आदि न लेवें।

उपलब्धि :—

१ किलो, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के मोहर बन्द डिब्बों में उपलब्ध।

जरयान

टिकिया

योगी

अनैच्छिक स्राव, पौरूष ग्रन्थि वृद्धि तथा वीर्य शीलता की सफल चिकित्सा

योग :—

जरयान की एक टिकिया में औषधियों का अनुपात :—

सालंब मिशरी	१०.०० %	बंग भस्म	१०.०० %
मूसली सत्त्व	१०.०० ,,	जवाहर भस्म	१०.०० ,,
गोंद बबूल	१०.०० ,,	सत्त्व लोबान	१०.०० ,,
शीतल चीनी सत्त्व	१०.०० ,,	बादयान सत्त्व	२०.०० ,,
चोब चींनी सत्त्व	१०.०० ,,		

भावना :—

लाजवन्ती, अश्वगन्धा, बला, भृङ्गराज के स्वरस व काढ़ों की भावना देकर बनाई गई है।

र्म एवं व्याधि निर्देश :—

ीर्याणुओं का उत्पादन बढ़ा कर इनकी क्रियाशीलता तथा वीर्य के संगठन पर प्रद प्रभाव रखती है। जिससे वीर्याणुओं की न्यूनता व क्रियाशीलता में कमी तथा वीर्य का पतलापन दूर होता है।

© सुषुम्ना नाड़ी के मैथुन सम्बन्धी केन्द्रों पर शामक प्रभाव उत्पन्न कर उच्च व नीचले मैथुन सम्बन्धी केन्द्रों के सक्षोम को कम करती है।

© मैथुन संवेदनाओं के उपलब्धि की शक्ति को बढ़ा कर शीघ्र वीर्यपात, स्वपनदोष हस्त मैथुन जन्य विकार व वृद्धावस्था के कारण होने वाले मैथुनीय दोष नष्ट हो जाते हैं।

© पौरुष ग्रन्थि की शोथ को कम करती है और उसकी वृद्धि को घटाती है।

सेवनविधि :—

© वीर्याणुओं की कमी में दो-दो गोली दिन में तीन बार ४ से ६ मास तक।

© सक्षोम या अति मैथुन के कारण होने वाले शीघ्र पात में-२ टिकिया दिन में ३ बार २ मास तक।

जरयान

टिकिया

योगी

© स्वप्न दोष, हस्त मैथुन एवं वीर्यपात में २–२ टिकिया ३ बार ३ से ४ सप्ताह तक व पुनः मात्रा घटा कर अगले २–१ सप्ताह तक।

© पौरुष ग्रन्थि शोथ में २–२ टिकिया प्रातः सायं आरम्भ कर धीरे–२ मात्रा घटाते जाए व जीवन भर २ गोली नित्य सेवन करना चाहिये।

विशेष सूचना :—

वीर्य न्यूनता व शीघ्रपतन में इसके साथ सैक्सोटैक्स के सेवन से अधिक उत्तम सफलता मिलती है।

पथ्य :—

खटाई, डालडा, गर्म मसाले, अचार आदि गर्म वस्तुओं का सेवन न करें।

उपलब्धि :—

१० टिकियों के सपत्र पैकिट व ऐसे १० पैकिट एक बाक्स में तथा ३० व ५०० गोलियों के मोहर बन्द डिब्बियों में।

जरयान का उपयोग ५३ रोगियों पर किया जिनमें ३४ पर अति उत्तम १० पर उत्तम प्रभाव रहा, यह उत्कृष्ट योग यूनानी व आयुर्वेदिक चिकित्सा के सबसे प्रभावी योगों में एक लगा है।

डा० एस० पी० चौहान
प्रिन्सिपल व अध्यक्ष मेडिसिन विभाग
गुरुकुल आयुर्वेदिक कालेज ज्वालापुर

तस्कीने कल्प

योगी

चूर्ण

पित्त वृद्धि को दूर कर विभिन्न कारणों से उत्पन्न रक्त स्राव को नियन्त्रित करने में समर्थ।

योग—

तस्कीने कल्प की प्रत्येक मात्रा में औषधियों का अनुपात :—

मोती पिष्टी	५.०० %	प्रवाल पिष्टी	५.०० %
तृणकान्त मणी पिष्टी	५.०० ,,	संगेयशव पिष्टी	१०.०० ,,
	१०.०० ,,	शंख भस्म	५.०० ,,
सूक्ष्म एला	१०.०० ,,	अकीक भस्म	५.०० ,,
श्वेत चन्दन	१५.०० ,,	दरयाई नारियल	१०.०० ,;
खदिर सार	१०.०० ,,	भीमसेनी कपूर	१०.०० ,,

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश:—

© यह पित्त वृद्धि को शान्त करता है, तथा बच्चोंके हरे-पीले दस्त, उल्टी व पाचन सम्बन्धी विकारों को शान्त करता है।

ख में छाले पड़ना (मुखपाक) में उपयोगी।

क्त वाहिनी, संकोच कारक रक्त स्राव के जमने की विधि में सहायक है।

न्त स्राव, गर्भ पातका रक्त स्राव, शल्य कर्म के पश्चात होने वाले रक्त व, नासिका, दंत या अर्श के मस्सों से रक्त आने में आशुलाभप्रद।

विशेष सूचना :—

यह सब प्रकार के दुष्प्रभावों से रहित है।

सेवन विधि :—

© १ से २ ग्राम दिन में २ बार फलरस, दूध या नारियल के रस से एक सप्ताह तक लेवें।

© मूख पाक में सूखा चूर्ण लगावें।

उपलब्धि :—

१० ग्राम व ५० ग्राम की मोहरबन्द डिब्बियों में।

दंतशोधक मंजन

योगी

परमसार चूर्ण

क्रमि नाशक, रक्त रोधक, दन्त पौष्टिक आदर्श पारिवारिक दन्त मंजन।

योग :—

रूमी मस्तगी	१.५० %	माजूफल	७.५० %
अकरकरा	४.५० ,,	समुद्र झाग	७.५० ,,
त्रिकटु	६.०० ,,	अखरोट त्वक्	५.५० ,,
यवानी सत्व	३.५० ,,	विभात्वक्	५.५० ,,
कपूर भीमसेनी	२.०० ,,	तेज बल	२६.५० ,,
निम्ब मज्जा	५.५० ,,	स्वर्ण गैरिक	८.०० ,,
सैन्धव	५.५० ,,	त्रिफला	६.०० ,,
स्फटिक पुष्प	५.०० ,,		

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश:—

© हिलते दांतों को मजबूत बनाकर पायोरिया, दांतों व मसूड़ों के पस व रक्त को तुरन्त बन्द करता है और दांतों को मोती के समान चमका देता है तथा उनकी दुर्गन्ध को दूर करता है।

© दांतों में पानी लगना व दन्तशूल छूमन्तर हो जाता है।

सेवन विधि :—

प्रातः सायं थोड़ा-२ मंजन ब्रुश अथवा अंगुली से दांतों पर मलें व गर्म पानी से कुल्ला करें।

उपलब्धि :—

५० ग्राम, १०० ग्राम व १ किलो के मोहरबन्द डिब्बों में।

बालामृत

द्रव रूप पानक

नवजात बच्चों और शिशुओं के स्वास्थ्य व जीवनीय शक्ति वर्धक भेंट ।

योग :—

प्रति चाय चम्मच (५ मि० लि०) बालामृत में औषधियों की मात्रा:—

केशर	०.५० %	नीलोफर	२.५० %
बाल चातुर्भद्र	६.०० ,,	चन्दन	२.५० ,,
चतुर्जातक	१०.०० ,,	सोया	३.५० ,,
गाजबान सत्त्व	१०.०० ,,	शरकरा	५५.०० ,,
मुलेहटी सत्त्व	३.५० ,,	(बुश पत्थय रंग युक्त)	
वासा	२.५० ,,		

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© नवजात बच्चों व शिशुओं के पाचन सम्बिन्धि विकारों को उत्पन्न होने से रोकता है ।

© बच्चों के दांत निकलते समय के सभी रोगों में, यथा दूध उलटना, पेचिश, ज्वर, आदि में परम उपयोगी है ।

© उदर शूल, आनाह (गैस), कबड़ा व कास आदि रोगों को शान्त करता है व भूख बढ़ाता है ।

© हड्डियों को मजबूत बनाकर स्वास्थ्य व बच्चों के भार को बढ़ाता है ।

© सूखा रोग, यकृत विकार व तिल्ली आदि में लाभ कर है ।

विशेष लाभ व सुरक्षा :—

योगी बालामृत बोनिसान, ग्राईप वाटर या ग्राईप मिक्श्चर के समान न होकर उनसे अधिक लाभ दायक विशिष्ट प्रकार की रसायन औषधि है । यह महा (सुरा) क्लोरोफार्म, अफीम, सोड़ा व अन्य प्रशामक (निद्राजनक) दवाओं से रहित है । वर्षों से चिकित्सकों का अनुभव पूर्णरूप से परिक्षित क्षुधावर्धक पाचक रसायन है ।

बालामृत

द्रवरूप पानक

योगी

सेवन विधि :—

© ३ से ६ मास की आयु तक १० से १५ बून्द तक ।

© ६ माह से १ वर्ष की आयु तक १५ से ३० बून्द तक ।

© १ वर्ष से ३ वर्ष तक की आयु तक १ चाय का चम्मच ।

© ३ से ५ वर्ष तक की आयु तक १ बड़ा चम्मच ।

पथ्य :—

इसकी शीशी ठण्डे स्थान पर रक्खें। बच्चे की आयु के अनुसार दवा निकाल कर दिन में २-३ बार चटावें। छोटी अवस्था में अक्सर बच्चों को मिटटी खाने की आदत पड़ जाती हैं, अतः उसे रोकना चाहिये। और २ तस्कीने कल्प इसके साथ नियमित देते रहने से सोने में सुहागा होगा. बच्चों ने पहले मिट्टी खाई हो तो लिवोसीन साथ में देवें।

उपलब्धि :—

११० मि० लि० की मोहर बन्द बोतलों में।

बालघुट्टी

द्रवरूप पानक

योगी

जन्मजात बच्चों के जीवन का स्वास्थ्य वर्धक आरम्भ।

योग :—

बालघुट्टी के प्रतिचाय वाले चम्मच (५ मि० लि०) में औषधीय अनुपात :—

शतपुष्पा	५.०० %	बेलगिरी	५.०० %
गुलबनफशा	५.०० ,,	अमलतास गूदा	२०.०० ,,
बालचातुर्भद्र	२०.०० ,,	शरकरा	५.०० ,,
वांसा	५.०० ,,		

04687

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© नवजात बच्चों के पाचन सम्बन्धी विकारों यथा कब्ज, उदरशूल, ऐंठन, अफारा हरे-पीले दस्त, उल्टी आदि को उत्पन्न होने से रोकता है व ठीक करती है।

च्चों को पुष्ट कर आने वाले रोगों से बचने की शक्ति प्रदान करती है।

च्चों के भार को बढ़ाती है व दांत निकलते समय के विकारो में उपयोगी है।

र :—

२ । ६ मास की आयु तक १० से १५ बून्द ३ बार प्रतिदिन।

© ६ मास से १ वर्ष तक १५ से ३० बून्द ३ बार प्रतिदिन।

© १ से ३ वर्ष की आयु तक १ से २ चाय के चम्मच २-३ बार।

उपलब्धि :—

५० मि० लि०, १०० मि० लि० की शील्ड बोतलों में।

योगी सुरमा

परमसार चूर्ण

योगी

नेत्रों के अनेक रोग दूर कर, मोतिया बिन्द से बचाता है।

योग :—

मोती पिष्टी	२.५० %	चाक्षुश सार	५.०० %
कृष्णाशिरस सार	५.५० ,,	कृष्णांजन	६५.०० ,,
यशद भस्म	१०.०० ,,	कपूर भीमसेनी	७.०० ,,
श्वेत पुनर्नवासार	१.५० ,,	ममीरी गांठ	२.०० ,,

भावना :—

निम्ब स्वरस, गुलाब, भृंगराज, कदली, त्रिफला, दारुहरिद्रा, शीतल चीनी आदि की भावना से तैयार किया जाता है।

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© इस सुरमें को नित्य प्रयोग करने से नेत्रों का कोई रोग नहीं होने पाता।

© यह नेत्रों की लाली, धुन्ध, जाला पड़ना तथा पड़वाल रोग को नष्ट करने में सक्षम है।

© मोतिया बिन्द को रोकता है। नियमित प्रयोग से चश्में की आवश्यकता नहीं रहती।

सेवनविधि :—

रात को सोते समय एक सलाई सुरमा नेत्रों में डाल कर सोवें। ध्यान रहे कि सुरमा अधिक न लगावें अन्यथा आंखें लाल हो सकती है।

पथ्य :—

इस सुरमें के सेवन के दिनों में यदि योगी रसायन सेवन करते रहें तो अति उत्तम है। साथ में त्रिफलाकषाय से प्रातः काल नेत्र प्रक्षालन करना भी हित-कर है, यदि यह न भी कर सकें तो शीतल जल से प्रातः काल आंखें अवश्य धोवें।

उपलब्धि —

१.५० ग्राम, ३ ग्राम।

योगी चाय

चायवत् चूर्ण

योगी

स्फूर्ति लाने वाला, थकान को दूर कर बल वर्धक पारिवारिक पेय।

योग :—

बादियान खताई	५.०० %	ब्राह्मी बूटी	२.०० %
अष्टवर्ग	२.०० ,,	मूस्तक	५.५० ,,
दालचीनी	५.५० ,,	लवंग	३.०० ,,
अश्वगन्धा नागोरी	५.०० ,,	तमाल पत्र	५.५० ,,
शत पुष्पा	५.५० ,,	तुलसी पत्र	५.५० ,,
मधुऐष्टी	६.०० ,,	चन्दन दोनों	७.५० ,,
ऐला सुक्ष्म	५.५० ,,	हरित चाह	५.५० ,,
आज्ञा घास	७.५० ,,	गोरख पान	८.०० ,,
गुलबनफशा	६,५० ,,	तार गांठ	४.५० ,,
हृदेश्वर त्वक	५,५० ,,		

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© देशी जड़ी-बूटियों से बनी यह चाय थकान, जुकाम, खांसी, नजला, इनफ्लुऐंजा ज्वर आदि नाशक है।

© यह पेट में गैस नहीं बनने देती।

© इसका शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होता।

सेवनविधि :—

१० ग्राम चाय १ किलो पानी में उबाल कर चाय की तरह दूध चीनी मिला कर सेवन करें।

पथ्य :—

इनफ्लुऐंजा के दिनों में चाय में चीनी के स्थान पर योगी कफसीन के एक-दो चम्मच डालकर पीने से बड़ा प्रभावशाली असर होता है।

उपलब्धि :—

१०० ग्राम एवं २०० ग्राम की मोहर बन्द डिब्बियों में।

योगी रसायन

योगी

अवलेह (जैमवत्)

मानसिक कार्य करने वाले बुद्धि जीवियों के लिये आदर्श, सात्विक परिवारिक पौष्टिक स्वास्थ्य वर्धक भेंट।

योग :—

ब्राह्मी स्वरस	५.५० %	सर्प गन्धा	२.५० %
हरितकी सार	५.५२ ,,	चतुर्जातक	२.५० ,,
आमलकी सार	१०.५० ,,	पिप्पली	२.५० ,,
शुद्ध घृत	५.०० ,,	वंशलोचन	३.५० ,,
अष्टवर्ग	५.०० ,,	शालभ मिश्री	१.५० ,,
दशमूल	५.०० ,,	मुसली सफेद	१.५० ,,
कुष्ठ	१.०० ,,	शंख पुष्पी	२.३० ,,
शुद्ध मधु	४.०० ,,	जटा मांसी	२.५० ,,
शुद्ध केशर	०.५० ,,	वच मीठा	१.५० ,,
बंग भस्म	०.५० ,,	शुद्ध शर्करा	४०.५० ,,
मुक्ता पिष्टी	०.५० ,,	प्रवाल पिष्टी	००.५० ,,
चन्दन दोनों	१.०० ,,	लौह भस्म	००.५०

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© यह मस्तिष्क के कोशों की रचनात्मक क्रिया शक्ति को बढ़ा कर मस्तिष्क सूत्रों को पुनर्जन्म देती है, जिससे यह मानसिक कार्य करने वाले डाक्टरों, वकीलों, जजों एवं विद्यार्थियों के लिये आवश्यक है।

© सुषुम्ना नाड़ी के मैथुन सम्बन्धि केन्द्रों पर शामक प्रभाव उत्पन्न करती है।

© शरीर में स्वभाविक विटामिन ए० डी० बी० सी० कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन व प्रोटीन की कमी को पूरा करता है जिससे नव यौवन, स्फूर्ति व शक्ति मिलती है, चुस्ती आती है।

© यह शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता की स्वाभाविक वृद्धि करता है, जिससे आने वाले रोगों से रक्षा होती है और बुढ़ापे में शक्ति क्षीण नहीं होती।

© ब्लड़ प्रेशर को सन्तुलित कर पूर्ण स्वाभाविक निद्रा लाती है।

योगी रसायन

अवलेह (जैमवत्)

विशेष सूचना :—

यह सदा निरापद औषध है चाहे नियमित से अधिक मात्रा भी क्यों न प्रयोग किया जाए।

सेवन विधि :—

१० ग्राम योगी रसायन दोनों समय दूध या चाय से नियमित जीवन भर लेना स्वास्थ्य व आयु के लिए सर्वोत्तम है।

पथ्य :—

डालड़ा, मसाले, लाल मिर्च आदि न लेवें।

उपलब्धि :—

१ किलो, ५०० ग्राम व २५० ग्राम के मोहर बन्द डिब्बों में उपलब्ध।

योगी रसायन का उपयोग मैं स्वयं तथा अन्य अनेक मित्रों व रोगियों पर काफी वर्षों से कर रहा हूँ और सभी को इससे अपूर्व लाभ हो रहा है, इसे प्रत्येक परिवार को अवश्य सेवन करना चाहिए।

वैद्य धर्मदत्त आयुर्वेद बृहस्पति
भू० पू० प्रधानाचार्य
गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद कालेज

रोगनाशक

चूर्ण

सर्वरोग हर रक्त शोधक अद्भुत प्रयोग।

योग :—

कुटकी	३.०० %	विडंग	२.०० %
चिरायता	३.०० ,,	चोब चीनी	५.०० ,,
कचूर	३.०० ,,	निम्बपञ्चांग	५.०० ,,
पनीर	३.०० ,,	त्रिकटु	६.०० ,,
चाक्षुष	३.०० ,,	सर्जक्षार	३.०० ,,
उषवा	३.०० ,,	अभयाउत्तम	३.०० ,,
स्वर्ण क्षीरी	३.०० ,,	वासापञ्चांग	३.०० ,,
हृदयेश्वरत्वक	३.०० ,,	काकमाची फल	३.०० ,,
शत पुष्पा	३.०० ,,	मुस्तक	३.०० ,,
शतावरी	३.०० ,,	अफस्नतीन	३.०० ,,
त्रिफला	६.०० ,,	गुडूची	३.०० ,,
चतुर्जातक	११.०० ,,	अर्गवध	६.०० ,,
इन्द्र जौं	२.०० ,,		

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© यह उदर शुद्धि कर सम्पूर्ण पाचन क्रिया को नीरोग बनाता है इससे रक्त शुद्ध होकर फोड़े-फुन्सी, दाद, खाज, पेट के कीड़े नष्ट होते हैं। यह सभी प्रकार के ज्वरों में लाभदायक है।

© यह दन्त शूल, सूजन (जो चोट आदि से हुई हो) में पूर्ण लाभकर है।

© मुख से राल बहने को ठीक करता है।

सेवनविधि :—

© रोगी एक से तीन ग्राम तक दिन में दो या तीन बार पानी से लेवें। यदि उदर विकार साथ हो तो इसमें 'योगी गैसांतक' अवश्य मिलाकर प्रयोग करना चाहिये। निरोगी इसी मात्रा में सप्ताह में एक बार एक मात्रा पानी से लेवें।

पथ्य :—

इसके सेवन के दिनों में दूध की मात्रा बढ़ा देनी चाहिये।

उपलब्धि —

१०० ग्राम की और ५० ग्राम की मोहरबन्द डिब्बियों में उपलब्ध।

रेचनी माइल्ड़ (मृदु) और स्ट्रोंग (तीव्र)

योगी

टिकिया

रेचनी पुरानी कब्ज (विबन्ध) और साधारण विबन्ध को बिना किसी कष्ट के ठीक करती है ।

योग :--

रेचनी माइल्ड़ :--

प्रत्येक टिकिया में औषधियों का अनुपात :—

कनकुष्ट	२०.०० %	घृत कुमारी सत्त्व	२०.०० %
सकमोनिया	३०.०० ,,	हरीतकी	३०.०० ,,

भावना :—

बादाम रोगन, अमलतास, निशोथ आदि की भावना से तैयार किया जाता है ।

रेचनी स्ट्रोंग :--

प्रत्येक टिकिया में औषधियों की मात्रा :—

सकमोनिया	२०.०० %	खीरे खिश्त	३०.०० %
रेवीन्द उशारा	२०.०० ,,	शुद्ध जयपाल	५.०० ,,
ऐलवा	१०.०० ,;	कज्जली	५.०० ,,
रुमी मस्तगी	१०.०० ,,		

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© रेचनी केवल अपकर्षणी गति को सन्तुलित कर स्वाभाविक मल को बाहर निकालती है जिससे आदतन कब्ज दूर होती है ।

© शौच करते समय खींच या जोर लगाने की अवश्यकता नहीं रहती ।

© औषधियों, स्थान परिवर्तन या ऋतुपरिवर्तन आदि के कारण विबन्ध, शिशुओं और गर्भवतियों को रेचनी माइल्ड़ तथा मांसाहारी व बलवान् रोगियों को, जिन्हें एक से अधिक बार शौच की इच्छा हो उन्हें 'रेचनी स्ट्रोंग' का प्रयोग करना चाहिये ।

विशेष सूचना :—

अपने विशिष्ट फार्मूले के कारण रेचनी का कोई बुरा प्रभाव नही होता और न ही इस पर ही पूर्ण रुप से निर्भर रहने की आदत पड़ती है जैसा कि दूसरी रेचक

औषधियां उत्पन्न करती हैं । रात को सोते समय लेने से एक शौच प्रातः काल ही बिना कष्ट के होता है ।

सेवनविधि :—

वयस्कों को रेचनी माइल्ड़ २ से ४ टिकियां सोते समय, तीव्र एक से दो टिकिया सोते समय ।

बालक— अवस्थानुसार ।

उपलब्धि :—

१० टिकियों के सपत्र व ऐसे १० सपत्र एक बक्स में ।
३०, १००, ५०० की मोहरबन्द डिब्बियों में ।

रेचनी कब्ज की निरापद औषधि है जिसने बहुसंख्यक रोगियों की कब्ज सम्बन्धी समस्या का समाधान कर दिया है ।

डा० ए० सी० राव
एम०बी०बी०एस०; एम०डी०
अध्यक्ष—**राम कृष्णा मिशन हास्पिटल**
वाराणसी ।

रियनौन

टिकिया

योगी

यह बनस्पतियों का ऐसा प्रभावशाली योग है जो कि वात सम्बन्धी रोगों के जड़ पर प्रहार कर उन्हें समूल नष्ट करता है।

योग :—

रियनौन की प्रत्येक टिकिया में औषधियों का अनुपात :—

सुरंजान धन	२५.०० %	महा योगराज गुग्गुलु	२५.०० %
महारास्नादि धन	१०.०० „	शुद्ध तन्दुक	१०.०० „
उसारे रेवन्द	२५.०० „	शुद्ध वत्सनाभ	५.०० „

भावना :—

निर्गुन्डी, विधारा, अश्वगंधा, गिलोय, भृंगराज, लहसुन, सर्पगन्धा, भिलावा, अजवायन के स्वरसों व काढ़ों की भावना देकर बनाया जाता है।

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश:—

© रियनौन लक्षणों की चिकित्सा नहीं अपितु रोग के मूल तक शोथ, वेदना और आक्षेप को शमन करती है।

© अस्थियों में विकृति तथा आमवात सम्बन्धी विकृतियों की उत्पत्ति को रोक कर जीर्ण आमवात (सन्धिगत आमवात) आमवातिक, सन्धि शोथ (जोड़ों में सूजन) को शान्त करती है।

© मूत्र से मूत्रअम्ल (यूरिक एसिड़) को निकालकर, वातनाड़ी शोथ, वातरक्त व कडरा शोथ (फायब्रोसायटिस) में बहुत उत्तम प्रभाव कर है।

© गृध्रसी व वात नड़ी वेदना में उपयोगी है।

विशेष सूचना :—

यह तेन्दुक व गुग्गुलु का योग होने से गर्भावस्था में नहीं देना चाहिये, शेष किसी प्रकार का बुरा असर नहीं होता। इसे वात नाशक अन्य औषधियों के साथ उनके गुणवर्धन के लिए भी दिया जा सकता है।

सेवन विधि :—

रियनौन की १-२ गोलियां दिन में दो या तीन बार ही रोग शान्ति के लिए पर्याप्त है। परन्तु रोग की तीव्र अवस्था में दो-दो टिकिया दिन में तीन बार

योगी

तब तक सेवन कराना चाहिये जब तक कि शोथ और वेदना शान्त न हो जाए। कम से कम दो सप्ताह तक सेवन करने के उपरान्त ही रियनौन का लाभ स्पष्ट दिखाई देने लगता है। एक बार सुधार प्रारम्भ हो जाने पर उत्तरोत्तर लाभ होता ही रहता है। एक से दो मास में पूर्ण लाभ हो जाता है। किन्तु चिकित्सा उस समय तक रखनी चाहिए जब तक सभी प्रकार की वेदना शान्त न हो जाए।

पथ्य :—

रियनौन के सेवन काल में ठण्डी वस्तुऐं जैसे चावल, मट्ठा, दही आदि नहीं लेना चाहिये।

उपलब्धि :—

१० टिकियों का सपत्र पैकिट व ऐसे १० सपत्र एक बाक्स में।
३०, १००, व ५०० टिकियों की मोहरबन्द डिब्बियों में उपलब्ध।

रियनौन का प्रयोग सन्धिगत आमवात (रहयुमेटायड आर्थराईटिस) के ३२ रोगियों पर किया गया जिनमें से १६ को अतिउत्तम व ६ को उत्तम लाभ प्राप्त हुआ।

डा० राजेन्द्र कुमार अग्रवाल
जी० ए० एम० एस० (आनर्स), एम० ए०
वातरोग विशेषज्ञ
रीडर रसशास्त्र एवं अध्यक्ष श्रद्धानन्द
धर्मार्थ चिकित्सालय, गुरुकुल कांगड़ी

लिकोप्लैक्स

टिकिया

योगी

श्वेत व रक्त प्रदर का शमन कर रजों दर्शन को नियमित कर स्वास्थ्य व सौंदर्यवर्धक है।

योग—

अशोक धनसत्व	२०.५० %	मण्डुर भस्म	१५.५० %
लोध्र धनसत्व	१५.५० ,,	कुकुटांडत्वक् भस्म	७.५० ,,
शालभ मिश्री	६.५० ,,	वंग भस्म	७,५० ,,
शिवलिंगी बीजसार	६.५० ,,	शालसारादि गण भावित---	
श्वेत कंटकारी	६.५० ,,	शिलाजीत सूर्यतापी मलाई	१२.५० %
शुद्ध तेन्दुक	१.५० ,,		

भावना :—

अनार, घृतकुमारी, पौरुषक, विजया, गिलोय, शतावरी, कीकर की फली, दशमूल, पंचवल्कल के रस व काढ़ों से भावना देकर तैयार किया जाता है।

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देशः—

© यह स्त्रियों के कमर, जांघ में वेदना, हाथ पैर व आंखों में जलन, आमाशय, यकृत, आंतों में वात और रक्त परिभ्रमण की विकृतियों का सुधार करके सभी प्रकार के प्रदर (श्वेत, रक्त, नील, कृष्ण) से सुरक्षित करती है।

© यह टिकिया मध्यस्वतन वातनाड़ी मण्डल के द्वारा योनी व गर्भाशय की मांस पेशियों पर सीधा प्रभाव करती है जिससे अनियमित ऋतु धर्म नियमित होता है।

© डिंबग्रन्थियों को उत्तेजित करती है और गर्भाशय की अन्तः कला को प्रभावित कर गर्भाशय से होने वाले अस्वाभाविक रक्त स्राव को बन्द करती है।

© प्रजनन अंगों (योनी तथा गर्भाशय) पर कृमिनाशक और संकोचक प्रभाव करती है जिससे मासिक अतिरिक्त स्राव विशेष कर लूप के कारण उत्पन्न रक्त स्राव को रोकता है।

© इसका रसायन प्रभाव गर्भाशय के रक्त परिभ्रमण को बढाता है और सारे प्रजनन संस्थान को प्रभावित करता है, जिससे गर्भपात नही होने पाता।

लिकोप्लैक्स

टिकिया

योगी

विशेष सूचना :—

पूर्ण रूप से निर्दोष हैं अतः निर्भय होकर दीर्घ काल तक व गर्भावस्था में भी प्रयोग कर सकते हैं। इसके साथ 'जरयान' की ३ टिकिया देने से रक्त स्राव बहुत शीघ्र नियन्त्रित होता है।

सेवन विधि :—

श्वेत व रक्त प्रदर में :— १ से २ टिकिया दिन में तीन बार ४ से ६ सप्ताह तक लूप के कारण रक्त स्राव में दिन में २-२ टिकिया ३ बार एक सप्ताह तक।

पथ्य :—

उष्ण पदार्थ :— तेल, गुड़ खटाई, मिर्च आदि का सेवन न करें।

उपलब्धि :—

१० टिकियों के सपत्र व ऐसे १० सपत्र एक बाक्स में ।
३०, १०० व ५०० टिकियों की मोहरबन्द डिब्बियों में ।

लिकोप्लैक्स सामान्य रक्त व श्वेत प्रदर के सभी रोगियों में यहां तक कि गर्भावस्था व शल्य क्रिया के पश्चात उत्पन्न प्रदर में भी अति शय लाभप्रद सिद्ध हुई।

डा० सुशीला धवन
एम०बी०बी०एस० व डी०जी०ओ०
स्त्री रोग विशेषज्ञय

लिवोसीन

ड्राप्स (बिन्दु); सीरप (शर्बत) टिकिया

योगी

यकृत की औषधि जन्य हानि को रोक कर उसके कार्य को सुधारते हुए स्वभाविक भूख बढ़ा कर नए रक्त व शरीर के भार को बढ़ाता है।

योग :—

प्रत्येक मि०लि० लिवोसीन की ड्राप्स (बिन्दुओं) में या २.५ मि०लि० सीरप में औषधियों का अनुपात :—

द्राक्षा स्वरस	१०.०० %	धात्री	१०.०० %
जम्बू	१०.०० ,,	गाजर	१०.०० ,,
सन्तरा	१०.०० ,,	दाडिम	१०.०० ,,

(परमसार) एक्ट्रेक्ट्स :—

रेवन्द चीनी	१०.०० %	कासनी	३.०० %
कुटकी	३.०० ,,	कालमेघ	३.०० ,,
काकमाची	३.०० ,,	लौह भस्म	१५.०० ,,
पुनर्नवा	३.०० ,,		

भावना :—

अनेक यकृदुत्तेजक औषधियों के रसों और काढ़ों से भावना देकर निर्मित।

प्रत्येक लिवोसीन की टिकिया में औषधियों का अनुपात :—

रूमी मस्तगी	१५.०० %	सौंठ	७.०० %
काकमाची सत्त्व	५,०० ,,	पिप्पली	७.०० ,,
कुटकी सत्त्व	५.०० ,,	गोजीवा सत्त्व	१४.०० ,,
पुनर्नवा सत्त्व	५.०० ,,	रेवन्द चीनी सत्त्व	५.०० ,,
सत्त्व कालमेघ	१०.०० ,,	मण्डूर भस्म	१५.०० ,,
काली मिर्च	७.०० ,,		

भावना :—

जामुन, आमलकी, अनार, सन्तरा, गाजर, द्राक्षा व अन्य अनेक वनस्पतियों के रसों और काढ़ों से भावना देकर निर्मित।

लिवोसीन

योगी

ड्राप्स (बिन्दु); सीरप (शर्बत); टिकिया

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश:—

© विषयुक्त और संक्रमण युक्त यकृत वृद्धि चाहे यह औषधियों के कारण हो अथवा शराब पीने के कारण जीर्ण यकृत शोथ या यकृत की सविष 'शोथ (सिरोसिस)' की पूर्व अवस्था, प्रारम्भिक दशा सबमें परम उपयोगी ।

© यकृय के कोशों की रचनात्मक क्रियाशीलता को बढ़ा कर यकृत सूत्रों को पुनर्जन्म देता है । लिवोसीन प्लाजमा प्रोटीन के अनुपात को नियमित कर यकृत के विकारों को शान्त करने तथा यकृत व उसके कार्य को स्वभाविक अवस्था में लाने वाली उत्तम औषधि सिद्ध हुई है ।

© यकृत की क्रियाशीलता से शरीर रचना सम्बन्धि कार्यवाहिनियां बढ़ जाती है, और भूख बढ़कार पाचन सुधरता है गैस व उससे उत्पन्न बेचैनी कम हो जाती है ।

© रक्त बढ़ाने की स्वभाविक प्रक्रिया उत्तेजित होती है जिससे शरीर का भार बढ़ता है, बच्चों का स्वास्थ सुधरता है और वह बढ़ते हैं तथा रोगों के बाद उत्पन्न होने वाली निर्बलता शीघ्र दूर होती हैं ।

© कामला, पाण्डू, यकृतवृद्धि, नवजात शिशुओं के यकृत सम्बन्धि विकार, बाल शोष आदि रोगों का समाधान कारक ।

© पुरानी बीमारियों के कारण उत्पन्न निर्बलता तथा कैन्सर में रेडियो चिकित्सा तथा रसायनिक योगों के प्रयोग से उत्पन्न दुष्प्रभावों को दूर करने के लिए लिवोसीन का प्रयोग बहुत ही लाभदायक है ।

विशेष सूचना :—

प्रयोगों से सिद्ध हो चुका है कि लिवोसीन का प्रयोग सभी प्रकार के विष प्रभावों से अछूता है और कितने ही लम्बे समय तक भी क्यों न प्रयोग किया जाए इससे कभी कोई हानिकारक प्रभाव शरीर पर नहीं होता ।

लिव्रोसीन

ड्राप्स (बिन्दु); सीरप (शर्बत); टिकिया

योगी

सेवनविधि :—

	ड्राप्स	सीरप	टिकिया
नवजात शिशु—	५-७ बून्द दिन में दो तीन बार।	१ मि.लि. (आधा चाय का चम्मच) दिन में २-३ बार।	—
बालक—	१०-१२ बून्द दिन में २-३ बार।	२.५ मि.लि. (पूरा चाय का चम्मच) दिन में २-३ बार।	१ टिकिया दिन में दो बार।
व्यस्क—	—	७.५० मि.लि. (दो चाय का चम्मच) दिन में दो-तीन बार।	एक से दो टिकिया दिन में दो-तीन बार।

अधिक मात्रा में सेवन सर्वथा दुष्प्रभाव रहित है, संक्रामक यकृत शोथ, (सिरोसिस आफ लीवर) में दुगनी मात्रा में देने से बहुत अधिक व शीघ्र लाभ होता है।

पथ्य :—

मिर्च, खटाई, अचार आदि का सेवन न करें। ताजी सब्जी तथा साधारण भोजन लें।

उपलब्धि :—

ड्राप्स—५० मि.लि. व १०० मि.लि. तथा ५०० मि.लि.।

सीरप—५० मि.लि. १०० मि.लि. व ५०० मि.लि. की मोहरबन्द बोतलों व ५ लीटर के जारों में।

टिकिया—१० टिकियों की सपत्र पैकिट व ऐसे १० सपत्र एक बक्स में तथा ३०, १००, व ५०० टिकियां मोहरबन्द डिब्बियों में।

वसन्त कुसुमाकर रस

परमसार चूर्ण

योगी

आयुर्वेद की सूक्ष्मीकरण (ऐटोमिकथ्योरी) पर बनी अनेक रोगनाशक बल ओज वर्धक रसायन।

योग :—

प्रवाल पिष्टी	१२.५० %	लौह भस्म	६.२५ %
मुक्ता भस्म	१२.५० ,,	रजत भस्म	६.२५ ,,
मकरध्वज	१२.५० ,,	स्वर्ण भस्म	६.२५ ,,
अभ्रक (१०० पुटी)	१२.५० ,,	केशर	६.२५ ,,
बंग भस्म	६.२५ ,,	कस्तूरी	६.२५ ,,
नाग भस्म	६.२५ ,,	अम्बर	६.२५ ,,

भावना :—

हरिद्रा, वासा, कमल, इक्षु, शतावरी, कदली, मालती, चन्दन के रस तथा क्वाथों की ७-७ भावनाऐं देकर निर्मित।

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© यह हृदय, मस्तिष्क तथा मर्म अंगों में नया जीवन बल, कान्ति, स्फूर्ति, पैदाकर बुढ़ापे में भी जवानी की उमंग पैदा करता है।

© यह रक्त के संचार को नियमित करता है जिससे यह निम्न रक्तचाप की विशिष्ट औषध है।

© यकृत व अग्न्याशय की क्रियाओं को सन्तुलित करता है जिससे कि उनके इन्सुलिन आदि रस ठीक मात्रा में निकलते हैं व मधुमेह (डायबेटीज) आदि रोग दूर हो जाते हैं।

© यह सारे मूत्रसंस्थान को विशेषकर गुर्दों को शक्तिशाली व नीरोग बनाता है। जिससे बार-२ मूत्र जाना ठीक होता है।

© यह पुराने प्रमेह व बचपन की गलतियों के कारण प्रजनन संस्थान में आई कमियों को ठीक कर शीघ्रपतन व नपुंसकता को दूर करता है।

© यह सम्पूर्ण वायु रोगों को नाश करता हैं।

सेवन विधि :—

इसकी एक रत्ती मात्रा दिन में दो बार मक्खन, मलाई, मुरब्बा आमला या मधु में डालकर सेवन करें ऊपर से दूध या फल स्वरस लेवें।

पथ्य :—

इसके सेवन के दिनों में सारे शरीर पर तैल की मालिश अत्यन्त हितकर है। साथ में भोजनोपरान्त "योगी आमलकी रसायन" व रात को "योगी रसायन" विशेष उपयोगी होता है। इसके पैकिंग को ढक कर रखें, जिससे कि कस्तूरी नष्ट न हो सके।

उपलब्धि :—

१ ग्राम व ४ ग्राम।

वीटाप्लैक्स

टिकिया

(योगी)

दैनिक खर्च हुई शक्ति की पूर्ति कर सारे शरीर को पुष्ट करता है।

योग :—

वीटाप्लैक्स की प्रत्येक टिकिया में औषधियों का अनुपात :—

जूद सार	२.५० %	रूमी मस्तगी	१०.०० %
केशर	०.६० ,,	त्रिफला	७.५० ,,
मकरध्वज	२.५० ,,	चतुर्जातक	१०.०० ,,
अभ्रक भस्म	२.५० ,,	त्रिकटु	७.५० ,,
वंग भस्म	५.५० ,,	शुद्ध गुग्गुलु	५.०० ,,
शुद्ध कुचला	२.५० ,,	अतीस कड़वी	२.५० ,,
कपूर शुद्ध	२.५० ,,	वंशलोचन	५.०० ,,
स्वर्ण माक्षिक सार	५.०० ,,	सालभ मिश्री	२.५० ,,
लौह सार	१०.०० ,,	यव क्षार	२.५० ,,
शिलाजीत सत्त्व	१०.०० ,,	तुख्मेहयात्	४.५० ,,

भावना :—

जीवनीय गण, घृत कुमारी, धातृफल, काकमाची के रसों व काढ़ों से निर्मित।

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देशः—

© यह खर्च हुई शारीरिक शक्ति को (विशेष जड़ी-बूटियों के सत्त्व, प्राकृतिक विटामिनों एवं लौह कैलशियम व फास्फोरस आदि नैसर्गिक तत्त्वों के मिश्रण होने से पूरा कर) आने वाले रोगों से शरीर की रक्षा करता है।

© गिरे हुए स्वास्थ और कमज़ोरी में शक्ति, बल, वीर्य को शीघ्र बढ़ाकर शरार में नया रक्त पैदा करता है, स्फूर्ति बनी रहती है।

© इसके सेवन से प्रमेह, प्रदरादि जननेन्द्रियों के विकार दूर होते हैं।

© गुग्गुलु व शिलाजीत का योग होने से यह सम्पूर्ण वायु के रोगों व पौरुष ग्रन्थी शोथ एवं अण्ड कोष वृद्धि में परम उपयोगी है।

© शिलाजीतु वंग, वंशक्षीरी व यवक्षार आदि उपादानों के कारण यह अश्मरी, मूत्र शर्करा आदि मूत्र विकार नष्ट होते हैं।

वीटाप्लैक्स

टिकिया

योगी

© यह विद्युत अनुपात (इलेक्ट्रोलाईट बैलेन्स) को विषम नहीं होने देता जिससे यकृत व हृदय को बल मिलता है।

सेवनविधि :—

एक से दो टिकिया दिन में दो तीन बार ८ से १२ सप्ताह तक। सर्दियों में अथवा रोग की तीव्रता में मात्रा बढ़ाई जा सकती है। बाद में मात्रा कम करते जायें।

विशेष सूचना :—

वीटाप्लैक्स पूर्ण निर्दोष है अतः निर्भय हो कर इसे प्रयोग कर सकते हैं।

उपलब्धि :—

१० टिकियों के स्पत्र व ऐसे १० स्पत्रक एक पैकिट में। व ३०, १००, ५०० टिकिया मोहर बन्द डिब्बियों में।

साधारण निर्बलता, अण्ड कोष वृद्धि, पौरुष ग्रन्थी आदि रोगों में वीटाप्लैक्स सफलता पूर्वक प्रयोग करता हूँ।

डा० वी० के० सेठ
एम० डी०
देहली।

शाही चूर्ण

सूक्ष्म चूर्ण

योगी

रूचि वर्धक स्वादिष्ट पाचक चूर्ण ।

योग :—

पिप्पली	६.५० %	श्वेत जीरक	२६.५० %
श्वेत मिर्च	११.१० ,,	हिंगु	३.३० ,,
कृष्ण जीरक	७.५० ,,	पोदीना सत्व	१.५० ,,
सैंधव	३०.५० ,,	सत्त निम्बू	१.१० ,,
सत्त दाल चीनी	५.०० ,,		

भावना :—

निम्बू स्वरस, चित्रक मूल क्वाथ की भावना देकर तैयार किया जाता है ,

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© यह अत्यन्त स्वादिष्ट रोचक व अजीर्ण दोष नाशक, रूचिवर्धक चूर्ण है । जिसे थोड़ा-२ खाने से भोजन की इच्छा बढ़ती है व कार्य करने की इच्छा रहती है ।

© मन्दाग्नि, आमदोष, अपचन, पेट दर्द, गैस बनना, अफारा, हैजा, जीभ चलाना तथा यात्रा के जल परिवर्तन जन्य विविध व्याधियों पर लाभदायक है ।

सेवन विधि :—

एक से दो ग्राम चूर्ण दिन में दो-तीन बार चाट लेवें ।

उपलब्धि :—

५० ग्राम व १०० ग्राम के मोहर बन्द डिब्बियों में ।

शोधित हरड़

हरड़ जैसी टिकिया

योगी

अत्यन्त स्वादिष्ट, पाचक और आध्मान (अफारा) में लाभदायक है।

योग :—

दाल चीनी	१०.०० %	हिंगु	५.०० %
हरितकी काबली	२०.०० ,,	जीरक	५.०० ,,
सैंधव	२०.०० ,,	अंगुरी सीरका	२०.०० ,,
पिप्पली	१०.०० ,,	बादयान खताई	१०.०० ,,

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© भारी और अनियमित भोजन के पश्चात पाचन में सहायक है।

© यात्रा सम्बन्धी व्याधियों यथा जी मिचलाना, उल्टी आदि में लाभ प्रद है।

© अजीर्ण, अरुचि, उदर का भारीपन, कब्ज, आनाह (गैस), उदर शूल में अत्यन्त उपयोगी।

विशेष सूचना :—

इसकी मात्रा दीर्घ समय तक भी निर्भय होकर सेवन की जा सकती है, इससे किसी प्रकार की हानि सम्भव नहीं।

सेवन विधि :—

एक से दो हरड़ें भोजन के बाद या जब जी चाहे दिन में दो या तीन बार तक मुख में रख कर चूसें।

उपलब्धि :—

५० ग्राम, १०० ग्राम तथा १ किलो की मोहर बन्द डिब्बियों में उपलब्ध।

शूगरोल

टिकिया

योगी

अग्न्याशय के स्राव इन्सूलिन का उत्पादन बढ़ा कर मूत्र व रक्त शर्करा निरोधक।

योग :—

शूगरोल की प्रत्येक टिकिया में औषधियों का अनुपात :—

वसन्त कुसुमाकर रस	३.०० %	पोस्त धन सत्व	१५.०० %
अग्नि जार (अम्बर)	५.०० ,,	गुड़मार धन सत्व	८.०० ,,
अतिविषा	५.०० ,,	जम्बूधन सत्व	८.०० ,,
अकीक पिष्टी	५.०० ,,	शालसारादिगण भावित शिलाजतु	३०.०० ,,
जाति फल	५.०० ,,		
जाति पत्री	५.०० ,,	सप्तरंगी	११.०० ,,

भावना :—

विजया, मुस्तक, त्रिफला, विल्व पत्र स्वरस, करेला, अर्जुन छाल नीम।

शूगरोल फोर्ट में—

शूगरोल फोर्ट की प्रत्येक टिकिया में औषधि का अनुपात :—

शूगरोल	७०.०० %	केशर	१०.०० %
वसन्त कुसुमाकर	१५.०० ,,	कस्तूरी	५.०० ,,

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश:—

शूगरोल—

© यह अग्न्याशय (Pancreas) के स्राव (इनसूलीन) को नैसर्गिक रूप में पूरी-२ मात्रा में उत्पन्न कर मूत्र व रक्त की शक्कर को जड़ मूल से नष्ट करने में सहायक है।

© बड़े-२ फोड़ों (पृष्ठव्रण) के ठीक होने में मदद करता है।

© परमवृष्य वाजीकरण बल वर्धक रसायन है।

© वीर्य एवं ओज को बढ़ाकर शरीर को सशक्त करता है।

शूगरोल फोर्ट—

© यह शूगरोल से शीघ्र प्रभावी योग है। अतः यह हृदय मस्तिष्क तथा मर्म अंगों में नया जीवन, बल, कान्ति, स्फूर्ति उत्पन्न करता है।

योगी

- © यह रक्त संचार को नियमित करता है और न्यून रक्त चाप (Low blood pressure) की विशिष्ट औषधि है ।
- © यह सारे मूत्र संस्थान को विशेषकर गुर्दों को शक्तिशाली व नीरोग बनाता है, जिससे बार-२ मूत्र का आना निश्चित ठीक होता है ।
- © निद्रा नाश व वायु रोगों में भी परम उपयोगी है ।

विशेष सूचना :—

शूगरोल से किसी प्रकार की हानि सम्भव नहीं । शूगरोल फोर्ट भी निरापद है । पर उच्च रक्त चाप (High blood pressure) में इसकी मात्रा आधी ही सेवन करवानी चाहिए ।

सेवनविधि :—

शूगरोल की २-२ टिकिया दिन में ३ बार ४ से ६ मास तक सेवन करावें, फिर ४ टिकिया नित्य अगले २ मास तक पुनः २ टिकिया १ वर्ष तक नियमित लेते रहें । पर यदि इससे लाभ कम हो या शीघ्र लाभ चाहें तो शूगरोल फोर्ट की १-१ टिकिया दिन में ३ बार दो-तीन सप्ताह में ही मूत्र व रक्त शर्करा को कन्ट्रोल करती है । पुनः अगले ४ सप्ताह तक २ टिकिया दैनिक व एक वर्ष तक १ टिकिया लेते रहने से निश्चित लाभ होता है ।

पथ्य :—

चीनी तथा अन्य मीठे पदार्थ, आलू, चावल का सेवन इत्यादि न करें । जितना हो सके ब्रह्मचर्य का पालन करें व इसके साथ यदि "योगी शक्तिवाकास" व "आमलकी रसायन" का सेवन करें तो परम हितकर है ।

उपलब्धि:—

शूगरोल—

१० टिकियों के स्पत्रक व ऐसे १० स्पत्रक एक बाक्स में व ३०, १००, ५०० टिकियां मोहर बन्द डिब्बियों में ।

शूगरोल फोर्ट—

चाँदी चढ़ी १० टिकिया एक स्पत्रक में व ऐसे १० स्पत्रक एक बाक्स में ।

शोधा

पानक एवं टिकिया

योगी

शरीर के रक्त की शुद्धि कर अस्वभाविक वृद्धि को कम कर सौन्दर्य एवं कान्ति वर्धक।

शोधा (पानक) के प्रत्येक २.५० मि. लि. में औषधियों का अनुपात—

तुख्महयात्	१०.०० %	चिरायता कड़वा	५.०० %
उन्नाब	१०.०० ,,	चन्दन दोनों	८.०० ,,
निम्ब पचाँग	५.०० ,,	पनवाड़	२.०० ,,
इन्द्रायण मूल	५.०० ,,	काली जीरी	२.०० ,,
त्रिफला	६.०० ,,	पित्त पापड़ा	१.०० ,,
दारू हल्दी	२.०० ,,	बाँसा	२.०० ,,
अफसन्तीन	२.०० ,,	करंज	१.०० ,,
लोबान	३.०० ,,	मुस्तक	१.०० ,,
बावची	३.०० ,,	देवदारू	१.०० ,,
मुण्डी	१.०० ,,	अतीस कड़वी	२.०० ,,
सार पंख	१.०० ,,	गाय का दूध	२.०० ,,
कुटकी	२.०० ,,	निम्ब शहद	३.०० ,,
गिलोय	२.०० ,,	रूमी मस्तगी	१०.०० ,,
सारिवा (दोनों)	२.०० ,,	गाजूबान सत्त्व	४.०० ,,
खैर सार	२.०० ,,		

शोधा की प्रत्येक टिकिया का औषधियों में अनुपात :—

रस मणिकया	१०.०० %
गन्धक रसायन	२०.०० ,,

निम्नलिखित का घनसत्व :— ७० %

उन्नाब	चन्दन (दोनों)	मुस्तक	तुख्महयात्
पनवाड़	सरपुंख	चोब चीनी	कालीजीरी
देवदारू	निम्ब पचाँग	अफसन्तीन	मंजीष्ठा
इन्द्रायण मूल	रूमी मस्तगी	कुटकी	त्रिफला
पित्त पापड़ा	अतीस कड़वी	दारू हल्दी	बावची
गिलोय	सारिवा (दोनों)	बाँसा	गाजवान सत्त्व
खैर सार	करंज पचाँग	लोबान	चिरायता कड़वा
मुण्डी पचाँग			

शोधा

पानक एवं टिकिया

योगी

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :--

© इसका उपयोग त्वचा की समस्त व्याधियों यथा दाद, खाज, (पामा) फोड़े फुन्सी में किया जाता है।

© यह रक्त के दूषित तत्वों को साफ कर पुराने कब्ज को दूर करता है।

© शोधा शरीर के अनावश्यक भार को कम करने के लिए (मोटापा दूर करने के लिए) वरदान है। इससे दाद, खाज, ऐक्जीमा, बच्चों का खसरा, गर्मी के दाने फोड़े-फुन्सी, जिगर, तिल्ली के विकार, रक्त और पेट के कीड़े, मलेरिया ज्वर आदि नष्ट होते हैं।

सेवनविधि :—

एक से तीन छोटे चाय वाले चम्मच दिन में २-३ बार फलों का रस या ताजा पानी मिलाकर ४ से ६ सप्ताह तक सेवन करावें। कब्ज दूर करने के लिए गर्म पानी मिलाकर पीवें अथवा चिकित्सक से परामर्श लेवें।

२-२ टिकिया दिन में ३ बार ४-६ सप्ताह तक सेवन करें और १-१ टिकिया दिन में ३ बार एक वर्ष तक सेवन करें।

पथ्य :—

शोधा के सेवन के दिनों भोजन दोनों समय भर पेट न खाया जाए। बल्कि कुछ भूख रख कर खाया जाए। मीठा (Suger) निशास्ते वाली (Starch) चिकनी देर में हजम होने वाली और बादी वस्तुऐं न सेवन करें। केवल हल्की व शीघ्र पचने वाली वस्तुयें ही खायें व दिन में पहले से दूध की मात्रा कुछ बढ़ा दें।

उपलब्धि :—

११२ मि० ली०, ४५० मि० ली०।

शक्ति विकास

परमसत्व तरल

योगी

चहुंमुखी शक्ति के विकास के लिये सारे परिवार को आदर्श भेंट ।

योग :—

बला	२.५० %
दशमूल	२.५० ,,
जातीफल	२.५० ,,
क्षीर विदारी	२.५० ,,
लवंग	२.५० ,,
लौह भस्म	५.५० ,,
चतुर्जातक	२.०० ,,
शुद्ध मधु	५.०० ,,
केशर कश्मीरी	०.५० ,,
कस्तूरी	०.५० ,,
श्वेत मूसली	५.०० ,,
त्रिकटु	५.५० ,,
अश्वगन्धा	५.५० ,
अम्बर	०.५० ,,
द्राक्षादि फलरस	१२,०० %
दोनों चन्दन	२.५० ,,
शर्बत दिल पसन्द	५.०० ,,
ब्राह्मी	१.०० ,,
गुल गुड़हल	१.०० ,,
कनक	१,०० ,,
शु० तेन्दुक	१.०० ,
शतावरी	४.५०
शिलाजीत सत्त्व	५.५०
अकरकरा	५ [illegible]
मौलश्री पुष्प	[illegible]
केवड़ा पुष्प	[illegible]
शालभ मिश्री	[illegible]
अजगन्धा	[illegible] ,,

निर्माण :—

परम सत्त्व तरल ।

शक्ति विकास ताजे फलों के स्वरस, फूलों की सुगन्ध व बहुमूल्य जड़ी [illegible] यों के सत्त्व विटामिनों से भरपूर आधुनिक युग की वैज्ञानिक भेंट है, इसे सर्व सम्पन्न सर्व श्रेष्ट टानिक माना गया है । यह प्रत्येक ऋतु व प्रत्येक [illegible] सदा सेवनीय है ।

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© किसी भी रोग के पीछे की निर्बलता दूर करके, स्फूर्ति, कान्ति और बलवीर्य वर्धक है ।

© यकृत, प्लीहा का कार्य ठीक करके हृदय, मस्तिष्क, गुर्दे, फुफ्फुस की दुर्बलता मिटाकर नया पुराना, श्वास-कास सभी प्रकार के क्षय आदि रोग नहीं होने पाते ।

© रोग व सम्पूर्ण वायु रोग—उन्माद, लकवा, अर्धाङ्ग, मृगी, हिस्टीरिया, आदि का संहार करता है। पेट में गैस नही बनती, कब्ज नहीं रहता।

© लो ब्लड प्रेशर को नियमित करता है।

सेवन विधि :—

शक्ति विकास दोनों समय भोजन के बाद या पहले १ से ३ चम्मच तक लेवें।

प —

ज्यादा मसाले, खटाई, लाल मिर्च, अचार आदि न लेवें।

उ —

मि.लि., ५०० मि.लि. व ५ लीटर की मोहर बन्द शीशियों में।

स्वादिष्ट चूर्ण

योगी

चूर्ण

अत्यन्त स्वादिष्ट, अरुचि नाशक, पाचक, उदर रोग हर।

योग :—

दाल चीनी	५.०० %	बादियान खताई	१०.०० %
सेंधा नमक	२०.०० ,,	जीरा	१२.०० ,,
पीपली	१०.०० ,,	शर्करा	३०.०० ,,
हींगु	३.०० ,,	नींबू सत्त्व	१०.००

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

© यह अत्यन्त स्वादिष्ट, भूख को बढा कर उसमें रुचि पैदा करने वाला उत्तम योग है।

© यात्रा सम्वन्धि व्याधियों यथा जी मिचलाना उल्टी, चक्कर आदि में [illegible]।

© भारी और अनियमित भोजन के पश्चात पाचन में सहायक।

© अजीर्ण, उदर का भारीपन, आनाह (गैस) उदर शूल में [illegible] समान उप[illegible]।

विशेष सूचना :—

इससे किसी भी प्रकार की हानि किसी भी समय किसी [illegible] मात्रा [illegible]भव नहीं।

सेवन विधि :—

एक से दो ग्राम चूर्ण आवश्यकतानुसार दिन में २-३ बार चाटें।

उपलब्धि :—

५० ग्राम, १०० ग्राम, व १ किलो के मोहरबन्द डिब्बो में उपलब्ध।

शुद्ध शिलाजीत सत्व

योगी

जामवत् ठोस

यह संसार के सभी रोगों को दूर करने वाली सर्व श्रेष्ट रसायन है, जो शरीर के सभी संस्थानों पर अपना विशिष्ट प्रभाव रखती है।

योग :—

शिलाजीत पत्थर का परम शुद्ध सत्वमात्र जिसे सूर्य की किरणों द्वारा ही शुद्ध किया गया है। रसायनिक विश्लेषण की दृष्टि से इसमें लौह, बंग, रजत, ताम्र, स्वर्ण आदि धातुओं तथा फास्फोरस, बैनजोयनिकऐसिड व पेट्रोलियम के नैसर्गिक तत्वों का संमिश्रण है।

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

.क व मूत्र मार्ग को सबल बना कर सम्पूर्ण मूत्ररोग-प्रमेह मधुमेह, धातुविकार क्कशोध, अश्मरी आदि की निरापद चिकित्सा है।

सभी प्रकार के वायु रोगों में विशेषकर हड्डियों व घुटनों के दर्द व सूजन में त्यधिक पयोगी है।

ोट, मोच, कटने जलने आदि में खाने व लगाने से शीघ्र प्रभावी।

री ित वसा के मैटाबोलिज़्म को प्रेरित कर मुटापे को कम करती है।

र्वोत्तम बल वीर्य वर्धक रसायन है जिसके नियमित प्रयोग से कोई भी रोग सामने नहीं आ पाता।

विशेष सूचना :—

शिलाजीत सदा निरापद अमृत है, इस से कभी भी किसी प्रकार की हानि सम्भव नहीं।

सेवनविधि :—

१/४ ग्राम से १/२ ग्राम थोड़े से दूध में घोलकर मीठा मिलाकर दिन में दो तीन बार पिलावें। बाह्य प्रयोग में थोड़ी शिलाजीत को पुराने घी में मिलाकर गर्म गर्म मलें।

उपलब्धि :—

१० ग्राम, २० ग्राम व ५० ग्राम की सीलड बोतलों में।

शुद्ध शिलजीत सत्व

जामवत् ठोस

योगी

योगी फार्मेसी की शिलाजीत शुद्ध एवं सूर्य तापी होने से हिमाचल गर्वनमेंट फार्मेसी में मंगा कर अनेक रोगियों पर आयुर्वेद शास्त्र में लिखे अपने पूर्ण गुणों में परखने में सर्वोत्तम रही, और मैं नियमित इसका प्रयोग करता आ रहा हूँ।

पं० भीमदत्त शर्मा
आयुर्वेद वाचस्पति, भु० पूर्व० अध्यक्ष
हिमाचल गर्वनामेन्ट आयुर्वेदिक फ.र्मेसी
माजरा

सैक्सोटैक्स

टिकिया व क्रीम (प्रलेप)

योगी

मैथुन की इच्छा और काम शक्ति को बढ़ाती है। (क्रीम केवल पुरुषों के बाह्य प्रयोगार्थ ही है)

सैक्सोटैक्स की प्रत्येक टिकिया में औषधियों का अनुपात:—

योग :—

सर्पगंधा	७.०० %	मकरध्वज	५.५० %
शुद्ध तेन्दुक	७.०० ,,	तृणकान्त मणि पिष्टी	५.५० ,,
सालभ मिश्री	१०.०० ,,	वंग भस्म	७.५० ,,
जातीफल	८.५० ,,	केशर	५.५० ,,
जाती पत्री	८.५० ,,	अम्बर	५.५० ,,
अकरकरा	८.५० ,,	मोती पिष्टी	४.०० ,,
शुद्ध शिलाजीत सत्व	८.५० ,,	कस्तूरी	१.०० ,,
पोस्त घनसत्त्व	२.०० ,,		

भावना :—

कदली, विदारीकन्द, अश्वगंधा, शतावरी, घृतकुमारी, कौंच, विधारा, हरिद्रा, विज[illegible], बला आदि रसायन और वाजीकरण औषधियों के काढ़ों और स्वरसों की भावना देकर बनाया गया है।

सैक्सोटैक्स क्रीम—

जातीफल	१०.०० %	भू नाग	५.०० %
जाती पत्री	१०.०० ,,	वीर बहूटी	५.०० ,,
लवंग	५.०० ,,	सांडे का तैल	१०.०० ,,
दाल चीनी	५.०० ,,	शेर की चरबी	१०.०० ,,
जूद बदस्तर	१०.०० ,,	आधार	१००.०० ,,
ज्योतिष्मति	३०.०० ,,		

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश :—

टिकिया—

◎ सैक्सोटैक्स के सेवन के पश्चात् शीघ्र ही सुषुम्नागत मैथुन केन्द्रों को उत्तेजित करता है जिससे मैथुन में संतोष एवं तृप्ति मिलती है।

◎ दीर्घ काल तक सेवन करने से काम इच्छा-बढ़ती है, मानसिक नपुंसकता, काम

सम्बन्धि वातनाड़ी की शिथिलता, वयस्कों में मैथुन में शिथिलता जातीयदुर्बलता आदि रोग दूर होते हैं।

© यह मुख्यता मस्तिष्क में अवस्थित पीयूष ग्रन्थि (पिच्युट्री ग्लैंड) आदि को प्रभावित कर वास्तविक वजिशक्ति प्रदान करता है। जिसके परिणाम वरूप यह उन औषधियों से भिन्न है जो प्रारम्भ में अस्थाई उत्तेजना उत्पन्न कर अन्त में पहले से भी अधिक वीर्य क्षीणता उत्पन्न कर देते हैं। सैक्सोटैक्स ह.रमोन (प्राणी विहीन ग्रन्थी स्राव) से रहित है अतः न तो यह वीर्याणुओं की न में बाधक है और न ही यह टैस्टीविरोन आदि की तरह कैन्सर को ही उ करता है।

© सैक्सोटैक्स शीघ्र प्रभावी और विश्वसनीय शक्ति शाली वाजीकरण है।

क्रीम—

© पुरुषेन्द्रिय में रक्तभ्रमण की मात्रा को बढ़ा देती है जिससे गुप्तेन्द्रिय के में भाग लेने वाले तन्तुओं को बल मिलता है।

© मैथुन स्तम्भन (देरतक) शक्ति बढ़ाने के विशेष गुण के कारण वृद्धावस्था मैथुन के कारण आई शिथिलता, और मानसिक नपुंसकता को दूर करती है

© शिश्न की रक्त वाहिनियों मे रक्त की मात्रा बढ़ा कर उसका आकार बढ़ा

सेवनविधि :—

मैथुन निर्बलता कम उत्थान में २-२ टिकिया दूध के साथ (या चाय के) सोने के आधा से एक घण्टे पहले लेनी चाहिये। वृद्धावस्था में मैथुन निर्बलता और साधारण निर्बलता में प्रातः सायं एक-एक गोली दो मास तक दूध से सेवन करने से स्नायु मण्डल को बल मिलता है और आत्म विश्वास बढता है। पुरुष शक्ति की निर्बलता में रोग अधिक होने पर दो-दो टिकिया दिन में तीन बार सेवन करें।

सैक्सोटैक्स

टिकिया व क्रीम

योगी

विशेष सूचना :—

रक्त चाप वृद्धि, रक्त धमनी, काठिन्य वृक्कों के जीर्ण रोगों में इसका उपयोग नहीं करना चाहिये तथा शीघ्र प्रभाव के लिये सैक्सोटैक्स की टिकिया को चबाकर दूध के साथ लेना उत्तम है। साथ ही पुरुष क्रीम की मालिश करने से कामेन्द्रिय दृढ़ होती है, और उत्थान को बल मिलता है और मैथुन का समय बढ़ता है।

क्रीम :—

शिश्न और उस के आस पास के प्रदेशों पर दिन में एक दो बार सैक्सोटैक्स ीम की मालिश करें, अण्ड कोशों व इन्द्रिय मुण्ड पर न लगावें। इसको धीरे धीरे तब तक मालिश करें जब तक कि लिंग तन्तुओं में इसका शोषण न हो जाए। मालिश के बाद इसे धोना या पोंछना नहीं चाहिए ताकि इसका पूरा ाभ हो सके। मैथुन से एक घण्टा पहले मालिश अधिक लाभ प्रद है। एक मय में १/२ से १ ग्राम तक ही मलें व इसे एक मास तक लगातार गाते रहें।

प:—

१० टिकियों के सपत्रक व एसे दस सपत्र एक बोक्स में व ३०, १०० व ५०० टिकियों की मोहर बन्द डिब्बियो में।

ोम—छोटी १० ग्राम व बड़ी २५ ग्राम की ट्यूबों में।

स्कीनो प्रलेप

योगी

प्रलेप (मलहम)

त्वचा रोगों पर लगाने का उत्तम मलहम ।

योग :—

मनःशिला	१०.०० %	हरिताल	१०.०० %
कज्जली	५.०० ,,	कपूर	१०.०० ,,
टंकण	५.०० ,,	यशद भस्म	१०.०० ,,
कम्पिल	५.०० ,,	मोम	१०.०० ,,
रोगन दाल चीनी	५.०० ,,	महा मरिच्यादि तैल	२५.०० ,,
रोगन जायफल	५.०० ,,		

गुण धर्म एवं व्याधि निर्देश:—

© संक्रमण रोधक (ऐन्टिसेप्टिक) है ।

© दाद, खाज, एगजीमा पर वाहिय उपयोग की सब से बढ़िया औषधि है ।

© मुहाँसे, भाँई आदि में बाह्य प्रयोग के लिये परम उपयोगी ।

© बिवाई फटने, कटने आदि की विशिष्ट चिकित्सा है ।

सेवन विधि :—

थोड़ी-थोड़ी स्कीनो प्रलेप धीरे-धीरे आवश्यकता अनुसार दो बार रोग युक्त स्थान पर मलें ।

पथ्य :—

इस के साथ शोधा एवं रोग नाशक का सेवन रक्त शुद्धि कर सदा के लिए रोगों से छुटकारा दिलाता है ।

उपलब्धि :—

१५ ग्राम व १०० ग्राम की ट्यूब में ।

स्टोनौन

टिकिया

योगी

यह टिकिया वृक्क अश्मरी गुर्दे की पत्थरी, मूत्र कृच्छ, (जलन से मूत्र आना) तथा मूत्र शक्ति की सभी समस्याओं का बिना शल्य क्रिया समाधान करती है ।

प्रत्येक स्टोनौन की टिकिया में औषधियों का अनुपात :—

योग :—

पुनर्नवा क्षार	५.०० %	वरूणादि धन	१०.०० %
गोखरू क्षार	५.०० ,,	पाषाणभेद धन	१०.०० ,,
यव क्षार	१०.०० ,,	संग यहुद भस्म	५०.०० ,,
संग सरेसांही	१०.०० ,,		

भावना :—

तुलसी, मूली, कुलथी, सागौन बीज, शिला पुष्प सुगन्ध वाला ।

धर्म एवं व्याधि निर्देश:—

मूत्राशय व वृक्कों की अश्मरी को अपने विशेष प्रभाव से तोड़ डालती है । कणों को चिपकाने वाली श्लेष्मा को पिघला देती है, जिससे वह विभक्त होकर मूत्र द्वारा बाहर निकल जाते हैं, कणों तथा रक्त रस के अनुपात में सुधार करके कणों का बनना रोकती है ।

© विभक्त कणों को और सुक्ष्मकर मूत्र द्वारा बाहर निकालने में सहायता करती है और शल्य क्रिया के बिना वृक्क अश्मरी को बाहर निकालती है ।

© यह विद्युत अनुपात (इलैक्ट्रोलाईट बेलेन्स) को विषम नहीं होने देता, जिससे अश्मरी के शल्य कर्म (आपरेशन) के बाद अश्मरी के पुनः निर्माण को रोकता है ।

© वृक्कों की वेदना और तनाव को कम करती है ।

© मूत्र प्रवाह एक समान तथा एक रस खुल कर होने लगता है। जिससे श्लेक्ष्ण मांस पेशियों की उत्तेजना को शान्ति मिलती है ।

विशेष सूचना :—

दीर्घ काल तक भी स्टोनौन के प्रयोग से कोई बूरा प्रभाव कभी नहीं होते देखा गया ।

स्टोनौन

टिकिया

योगी

सेवन विधि :—

अश्मरी में एक से दो टिकिया दिन में तीन बार चार से छः मास तक तीव्र वृक्क शूल में २-२ गोली प्रत्येक २ घण्टे के बाद दे सकते हैं। पत्थरी आपरेशन द्वारा निकलने के बाद भी २-२ टिकिया दिन में ३ बार पहले महीने व १-१ टिकिया दो या तीन बार लेते रहने से पत्थरी का पुनः बनना रुकता है।

पथ्य :—

मूली, टमाटर का सेवन न करें, नारियल का पानी, जौ का यूष अथवा जौ की रोटी, कुलथी का काढ़ा लेना चाहिये। नींबू डाल कर कुलथी क्वाथ का उपयोग अश्मरी कण निकालने में बहुत सहायक होता है। चारों मगजं (खीरा, ककड़ी खरबूजा, तरबूज) को सेवन करना भी अच्छा है।

१० टिकियों के सपत्र पैकिट व एक बाक्स में १० सपत्र तथा ३०, १००, ५०० टिकियों की मोहर बन्द डिब्बियों में उपलब्ध।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि वृक्क तथा मूत्राशय की अश्मरी में जब कोई अन्य औषधि अपना प्रभाव छोड़ देती है, वहाँ भी स्टोनौन पूरा २ लाभ पहुंचाती है। कई आपरेशन के लिए हास्पिटल में दाखिल रोगियों को कुछ दिन में ही आश्चर्य जनक लाभ हो गया जिससे आपरेशन की जरूरत नहीं पड़ी।

डा० के० आर० कपूर
एम० एस० सीनियर सर्जन
बोकारो स्टील प्लांट हास्पिटल धनबाद

43

43